Impact Factor – 7.367

ISSN-2349-638x

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Special Issue No.117

Future Academic Libraries : Designing Technological Innovation and Best Practices in Academic Libraries

Chief Editor

Dr.Pramod P. Tandale

IMPACT FACTOR

SJIF 7.367

For details Visit our website

www.aiirjournal.com

Sr. No.	Name of the Author	Title of Paper	Page No.
74.	डॉ. प्रविण विलास चौगले	जनसंचार माध्यम और हिंदी भाषा	352
75.	सुश्री. श्रीदेवी बबन वाघमारे	भूमंडलीकरण के दौर में मोबाइल के कारण हुए वर्तमानकालीन बदल ('मुन्नी मोबाइल' उपन्यास के संदर्भ में)	356
76.	श्री. अजय महेंद्र कांबळे	हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार में सोशल मीडिया का योगदान	359
77.	सौ. पूजा प्रसाद चव्हाण	कमला इन्स्टिट्यूशनल रिपॉझिटरी – एक अभ्यास	362
78.	डॉ.एस.एस.पाठक कु.कांबळे कल्पना बापूराव	आधुनिक ग्रंथालयाचे व्यवस्थापन आणि नवोपक्रम	368
79.	डॉ .पांडुरंग पाटील	कोरोना महामारी च्या काळातील शिवाजी ग्रंथालयाचे विविध उपक्रम	371
80.	डॉ.सुजय बाबूराव पाटील	ग्रंथालय आणि वाचन विश्वातील नवी सजगता	375
81.	प्रा.राजेंद्र सखाराम सावेकर	डिजीटल ग्रंथालये : काळाची गरज	377
82.	डॉ. अंजली दशरथ काळे	ग्रंथालयामध्ये मोबाईलचा उपयोग	383
83.	सौ. पाटोळे स्मिता प्रकाश	सोशल मिडीयाचा शिक्षणात वापर	385
84.	श्रीमती. मनिषा विलासराव पाटील श्री. विलास शामराव पाटील	'हरित ग्रंथालय' - पर्यावरण संवर्धन व पर्यावरण साक्षरतेची एक सामाजिक जबाबदारी	389
85.	डॉ. तेजस्विनी मुडेकर प्रा. सुरेश जोती पाटील	ग्रंथालयातील आपत्ती व्यवस्थापन : काळाची गरज	400
86.	आमलपुरे विष्णुकांत विश्वनाथ डॉ. एस.एस.पाठक	ग्रंथलयातील वाचन साधनावरील तांत्रिक प्रक्रिया	404

हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार में सोशल मीडिया का योगदान

श्री. अजय महेंद्र कांबळे
(एम. ए . सेट, नेट हिंदी)
सहायक प्राध्यापक
कमला कॉलेज, कोल्हापुर
ई-मेल – ak6424515@gmail.com

सारांश -

आज 21 वीं सदी के युग में वैश्वीकरण के कारण जनसंचार और सोशल मीडिया का दायरा बहुत व्यापक होता हुआ दिखाई देता है। इंटरनेट के साथ-साथ सोशल मीडिया में और भी ऐसे कई ऐप है जो हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार में उनका योगदान दे रहे हैं। वर्तमान समय सोशल मीडिया का चल रहा है और हमें सोशल मीडिया का उपभोग लेना है तो हमें भाषा आना जरूरी है। इस समय सोशल मीडिया पर हिंदी एक ऐसी भाषा बन गई है जो जनमानस की भाषा है। संपर्क भाषा के रूप में किसी भाषा की ओर देखते हैं तो हमारे सामने हिंदी भाषा का ही नाम आता है। आज आज सोशल मीडिया की सहायता से हिंदी भाषा भारत के बाहर भी फैली हुई हमें नजर आती है, और इसे दुनिया के हर कोने तक पहुंचाने का काम सोशल मीडिया कर रहा है। (लवटे, २०१३)"[१]

बीजशब्द- *हिंदी भाषा,सोशल मीडिया, इंटरनेट, टेलीविजन, कंप्यूटर।*

भारत एक ऐसा विशालकाय देश है जिसमें सौ से अधिक भाषाएं बोली जाती है। लेकिन इन सभी भाषाओं में हिंदी एक ऐसी भाषा है जो पूरे भारत में बड़े स्तर पर बोली और प्रयुक्त की जानेवाली भाषा है। सिर्फ भारत में ही नहीं तो पूरे विश्व में हिंदी भाषा अधिकतम रूप में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा बन रही है। इसे पूरे विश्व में पहुंचाने का कार्य आज सोशल मीडिया कर रहा है। हिंदी भाषा आज के वर्तमान समय में कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश को जोड़ने वाली भाषा बन गई है। हमें भारत का भ्रमण करना है तो संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का ही प्रयोग बड़े पैमाने पर होते हुए हमें दिखाई देता है।

इंटरनेट को हिंदी में 'अंतरजाल' कहते हैं। इंटरनेट की सहायता से हम आज विश्व के किसी भी कोने से जुड़ सकते हैं। इसीलिए इसे विश्वव्यापी नेटवर्क भी कहा जाता है। आज इंटरनेट पर 15 से ज्यादा सर्च इंजन उपलब्ध है। इनमें हिंदी वेबसाइट का प्रयोग करने वालों की तादाद बढ़ती ही चली जा रही है। इंटरनेट की सहायता से हर कोई आज ब्लॉग लिख रहे हैं। ब्लॉग आज एक अभिव्यक्ति स्वतंत्र का माध्यम बन चुका है, जिसमें हम अपनी मन की बात लिखकर दुनिया के सामने रख सकते हैं। हिंदी भाषा से ब्लॉग लिखने वालों की संख्या में हर समय वृद्धि होती हुई दिखाई दे रही है। इसी वजह से हिंदी का पाठक वर्ग भी बढ़ता हुआ नजर आ रहा है। इंटरनेट एक खुला और स्वतंत्र माध्यम है। सूचना प्रौद्योगिकी को जनमानस तक पहुंचाने के साधन के रूप में इंटरनेट को जाना जाता है। वर्तमान समय में इंटरनेट में समग्र दुनिया को आज एक छोटे से गांव में परिवर्तित कर दिया है। जिससे एक माउस पर क्लिक करके सारी दुनिया की जानकारी चुटकी बजाते ही प्राप्त कर सकते हैं। जो भी जानकारी चाहिए ओ सभी भाषा में वहां पर उपलब्ध कराई गई है। इंटरनेट के माध्यम से हिंदी भाषा को पढ़ने वाला पाठक वर्ग अब विदेश में भी तेजी से बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है।

आज विश्व के धरातल पर संपर्कता के माध्यम इतने बढ़ चुके है की इस संदर्भ में निवेदिता अग्रवाल जी कहती है कि "फेसबुक व्हाट्सएप और वीडियो शेयरिंग ऐप से विदेश के दोस्तों से भी बात होती है, जब हिंदी में मैं कोई पोस्ट लिखती हूं तो वे ट्रांसलेटर की सहायता से उसका मतलब पता करते हैं, कई बार उसे पढ़कर उस पोस्ट पर हिंदी में टिप्पणी लिखते हैं।" (अग्रवाल, २०१८)[२] यह हमारे लिए गर्व की बात है कि विदेश में भी लोग हमारी भाषा के प्रति जागरूक है। इससे यह पता चलता है कि दुनिया भर में हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार में इंटरनेट का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

कोई भी भाषा अनुकरण से ही सीखी जाती है। आज का युग टेलीविजन का युग माना जा रहा है, क्योंकि टेलीविजन श्रव्य के साथ दृश्य भी दिखाता है। टेलीविजन चैनलों की बात करें तो सबसे ज्यादा चैनल हिंदी की ही नजर आते हैं। उनमें हिंदी समाचार भी सबसे अधिक दर्शकों द्वारा देखें या सुने जाते हैं। टीआरपी के मामले में भी हिंदी चैनल अंग्रेजी चैनलों से कहीं आगे है। आज हर किसी के घर में टीवी है और उसी के माध्यम से हिंदी भाषा को हर घर तक पहुंचाने का कार्य टेलीविजन कर रहा है। (तिवारी, २०१९)[३] आज टेलीविजन के रूप में बहुत से माध्यम हमारे सामने आए हैं, उनमें से प्रमुख रूप में रेडियो, मीडिया, फिल्म इंडस्ट्रीज आदि। इन सभी माध्यमों की वजह से हिंदी का प्रचार और प्रसार बहुत तेजी के साथ में बढ़ता हुआ नजर आ रहा है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को सर्वश्रेष्ठ बनाने में रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आकाशवाणी में समाचार, शिक्षा, संगीत, मनोरंजन आदि सभी स्तरों पर हिंदी भाषा को देश के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसमें फिल्मी गीतों का विशेष स्थान रहा है। हिंदी फिल्मी गीतों की लोकप्रियता भारत की सीमाओं को लांघकर दुनिया के उस पार जा पहुंची है। हिंदी फिल्मों ने तो हिंदी भाषा को सात समंदर पार पहुंचाया है।"भारतीय संस्कृति के संदर्भ में सिनेमा शायद सबसे अधिक लोकप्रिय और सबसे अधिक शक्तिशाली संचार माध्यम है।" (तिवारी, २०१९)[४] हिंदी सिनेमा ने तो दुनियाभर के दर्शकों के मन पर राज किया है। हिंदी फिल्में बाहर के देशों के थिएटर में भी चलाए जाते हैं। इससे हमें हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता के बारे में मालूम होता है। हिंदी फिल्म देखने वालों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती चली जा रही है। फिल्म देखने की दिलचस्पी में लोग भाषा को अपने आप आत्मसात कर लेते हैं। इससे यह पता चलता है कि फिल्म इंडस्ट्रीज का भी कितना बड़ा योगदान हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार में है।

वर्तमान समय में लगभग हर व्यक्ति के पास अपना निजी मोबाइल होता है। लोगों की भावनाओं को एक दूसरे तक पहुंचाने की हेतु बहुत से ऐप का निर्माण किया जा रहा है, और उन सभी ऐप में हिंदी भाषा उपलब्ध है। मोबाइल और कंप्यूटर के हिंदी टाइप करने हेतु यूनिकोड की सुविधा भी की गई है। जिसके अंतर्गत अंग्रेजी स्पेलिंग टाइप बनाकर हिंदी टाइपिंग आसानी से की जा सकती है। हिंदी टाईपिंग की कठिनता को 'मंगल फॉंट' ने सरल बना दिया है। इसके साथ ही 'वॉइस टाइपिंग' का भी निर्माण हुआ है, उस के माध्यम से हिंदी टंकण न जानने वाला भी आसानी के साथ अपनी बातें सामान्य बोलचाल में हिंदी भाषा बोलकर दूसरों तक पहुंचा सकता है। सोशल मीडिया में आज बहुत ऐसे आप आ गए हैं, जिनके माध्यम से मनुष्य आपस में संपर्क स्थापित कर सकता है। आज की स्थिती पहले जैसे नहीं रही, पहले अगर कोई संदेश भेजना हो, तो पत्र के माध्यम से भेजा जाता था, पर उसमें बहुत समय लगता था। लेकिन वर्तमान समय में सोशल मीडिया के नए उपकरणों के माध्यम से कोई भी संदेश हम चुटकी बजाते ही भेज सकते हैं। उपकरणों में प्रमुख रूप से व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर आदि उपकरणों का समावेश है। इन उपकरणों के माध्यम से हम एक दूसरे के साथ 'लिखित' और 'मौखिक' दोनों में भी जब चाहे तब संपर्क बना सकते हैं। इतना ही नहीं तो यूट्यूब जैसे ऐप पर हिंदी भाषा छाई हुई है। हिंदी शिक्षा के यूट्यूब चैनलों पर तो भारत के ही नहीं तो आसपास के देशों के भी बच्चे हिंदी भाषा से पढ़ रहे हैं। इन सभी सोशल मीडिया की वजह से वर्तमान में हिंदी भाषा को एक नया दर्जा प्राप्त होता हुआ दिखाई दे रहा है।

कंप्यूटर भी इसमें पीछे नहीं है। "हिंदी भाषा का पहला कंप्यूटर 1977 में आया।" (विकास पीडिया , २०२०)[५] हिंदी भाषा को कंप्यूटर से जोड़ने का सबसे पहला प्रयास 'राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय' द्वारा किया गया। हिंदी में काम करने के लिए ' शाब्दिका' नामक सॉफ्टवेयर तैयार किया गया। और इसमें तकनीकी रूप में विकास करने का काम भारत सरकार की कंपनी 'सी-डैक पुणे' की ओर से किया गया। यह विकास मोटे तौर पर तब हुआ जब एक इनकोडिंग प्रणाली विकसित हुई जिसे 'यूनिकोड' नाम से जाना जाता है। यूनिकोड का शाब्दिक अर्थ है, जिसमें भाषा को कोड की जाने वाली छवियां एक जैसी हो, जिसमें एकरूपता हो। इससे हम अंग्रेजी टाइप बनाकर हिंदी में लिख सकते हैं। इससे हिंदी में लिखने वालों की संख्या में वृद्धि होती हुई हमें दिखाई देती है। हिंदी में लिखने वालों की तादाद बढ़ने के कारण उनका पाठक वर्ग भी तेजी के साथ बढ़ता चला गया और यह पाठक वर्ग बढ़ने में कंप्यूटर और यूनिकोड का योगदान महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि आज हिंदी को दुनिया के हर एक कोने तक पहुंचाने में सोशल मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान दिखाई देता है। सोशल मीडिया में जो बदलते रूप आ रहे है, उनमें से प्रमुख रूप में इंटरनेट,टेलीविजन,

मोबाइल,फिल्म इंडस्ट्रीज, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, यूट्यूब, वाट्सअप आदि हिंदी भाषा को विश्वभर में पहुंचाने का कार्य करते हुए हमें दिखाई देता है।

संदर्भ :

1. अग्रवाल, न. (२०१८ , जानेवरी २५). *राजस्थानी साहित्य अकादमी* . From साहित्य अकादमी : https://rsaudr.org/show_artical.php?&id=655
2. तिवारी, अ. (२०१९). *मीडिया समग्र.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन दरयागंज.
3. पुखराज. (२०१८ , जानेवारी २५). *राजस्थान साहित्य अकादमी* . From साहित्य अकादमी : https://rsaudr.org/show_artical.php?&id=655
4. लवटे, स. क. (२०१३). *हिंदी वेब साहित्य.* इलाहाबाद: राजकमल प्रकाशन.
5. *विकास पीडिया* . (२०२० , जानेवारी २). From विकास पीडिया : https://hi.vikaspedia.in/education/computer-education/91590292a94d92f94291f930-93894091694b902-93993f902926940-92e947902/90690891f940-92e94892894d92f941905932/91590292a94d92f94291f930-91593e-90792493f93993e938

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com